।। श्रीहरिः ।।

जगद्गुरु श्रीमद्वल्लभाचार्य के सम्प्रदाय प्रमाण

उत्सव तथा व्रतन की टीप

विक्रम संवत् २०७८ आनन्द नाम संवत्सरे ई. स. 2021-2022

श्री वल्लभाब्द ५४३ - ५४४ शालिवाहन शके १९४३ प्लव नाम संवत्सरे

जगद्गुरु श्रीमद्वल्लभाचार्य प्रधानपीठस्थित

आचार्यवर्य्य गोस्वामी तिलकायित

श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज की आज्ञासूं प्रकाशित

प्रकाशक : विद्याविभागाध्यक्ष, मन्दिर मण्डल, श्री नाथद्वारा

आचार्यवर्य्य गोस्वामी तिलकायित

श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज

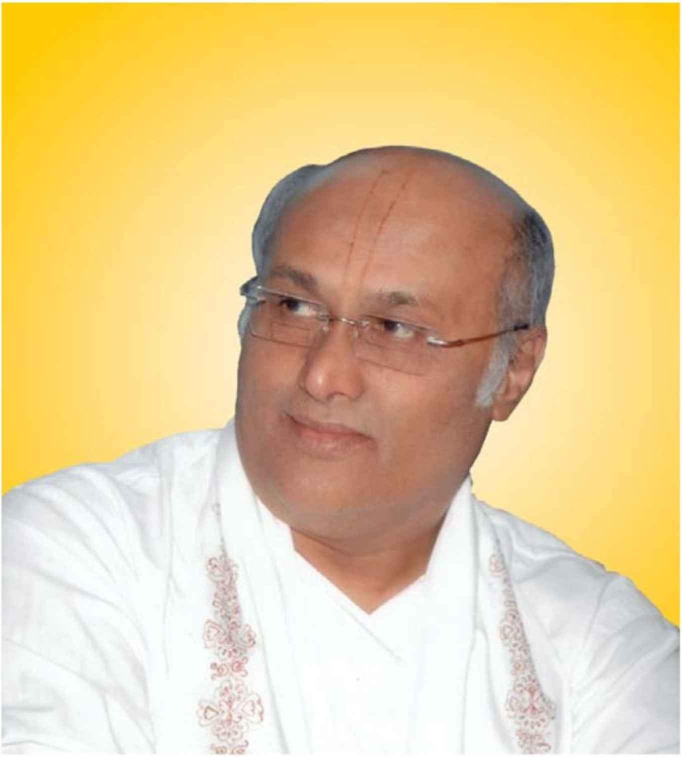

नाथद्वारा

जन्मतिथि - फाल्गुन शुक्ल ७
विक्रम संवत् - २००६

जन्म तारीख - २४ फरवरी
सन् - १९५०

सर्वाम्नायमयेन येन वहताऽन्तःपुण्डरीकेक्षणं
हृत्पद्मानि विकासितानि सुपथा व्यक्तीकृता हर्षिताः।
हंसालोचनरोधिनः प्रमथिता वादाः प्रमादावहा
गोभिः कर्म सतां प्रवर्तितमसौ श्रीवल्भार्कोऽवतात्।।

श्री भारतमार्तण्डमहाभागाः।

निःसाधन समोद्धार करणाय समागताः।
श्रीमन्तो वल्लभाचार्याः कृपयन्तु सदामयि।।
सर्वदा ध्यात्म तल्लीनं, श्रीमन्तं प्रियदर्शनम्।
इन्द्रदमनमाचार्यं, पीठाध्यक्षं नमाम्यहम्।।
आर्त्रत्राण प्रतिज्ञाय शुद्धाद्वैतावलम्बिने।
श्रीनाथ पीठाधिष्ठात्रे राकेशाय वयं नुमः।।

प्रति १,००,००० {न्योछावर १०/- रुपया}

निवेदन

पुष्टिमार्गीय विचारों के प्रचारार्थ पूज्यपाद आचार्यवर्य्य गोस्वामीतिलकायित श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी {श्री राकेशजी} महाराज की आज्ञा से टिप्पणी के अन्त में श्रीमहाप्रभुजी के उपदेश पृष्ठ २८ से लेकर ३३ पर प्रकाशित किये हैं। आशा है वैष्णव बन्धु इन उपदेशों से लाभ लेकर हमारे प्रयास को सफल बनायेंगे।

जिनको तिथ्यादिक की विशेष जानकारी अपेक्षित हो उनको यहां से प्रकाशित होने वाले श्रीनाथ पंचांग को मँगवा लेना चाहिये अथवा तत्तत्प्रान्तों की तिथ्यादिक की विशेष जानकारी अपेक्षित हो तो तत्तत्प्रान्तों से प्रकाशित होने वाले दृश्य गणितानुसारी पंचांग को मंगवा लेना चाहिये।

अध्यक्ष

विद्या विभाग मन्दिर मण्डल, नाथद्वारा

नोट : पुष्टिमार्ग सम्बन्धी विशेष जानकारी वेबसाइट www.nathdwara.in/ www.nathdwaratemple.org के द्वारा भी आप प्राप्त कर सकते है।

वल्लभाब्द ५४३			**चैत्र शुक्लपक्षः** विक्रमाब्द २०७८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	मंगल	13	अप्रेल, सन् 2021 संवत्सरोत्सवः।
२	बुध	14	मेष संक्रान्तिः। सतुआ गोपीवल्लभ या राजभोग में पुण्यकाल आज सूर्योदय से लेके मध्याह्न पर्यन्त है। तामे भी संक्रान्ति के पास के दो घण्टा अति मुख्य पुण्यकाल है। अबके यह संक्रान्ति १ मंगल की रात्रि के २ बजके ३४ मिनिट पर बैठी है। तासूं पुण्यकाल आज मान्यो जायेगो। श्रीकूं भोग धरे पीछे दान श्राद्धादि करने।
३	गुरु	15	गणगौरी। (चूंदड़ी गणगौर)
४	शुक्र	16	पंचरंगी लहरियाँ (हरि गणगौर)
५	शनि	17	गुलाबी गणगौर
६	रवि	18	श्री गुसांईजी के छट्ठेलालजी श्री यदुनाथजी को उत्सव। (१६१५) केसरी गणगौर एवं यमुना छट्ठ।
७	सोम	19	
८	मंगल	20	
९	बुध	21	रामनवमी व्रतम्।
१०	गुरु	22	रामनवमी व्रत की पारणा।
११	शुक्र	23	कामदा एकादशी व्रतम्। श्रीवल्लभाचार्य चरण के उत्सव की बधाई।
१२	शनि	24	
१३	रवि	25	
१४	सोम	26	
१५	मंगल	27	इष्टिः।

वल्लभाब्द ५४३			**वैशाख (गु. चैत्र) कृष्णपक्षः** विक्रमाब्द २०७८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
२	बुध	28	
३	गुरु	29	
४	शुक्र	30	
५	शनि	1	मई
६	रवि	2	
७	सोम	3	श्री विट्ठलनाथजी को पाटोत्सव।
८	मंगल	4	
९	बुध	5	
१०	गुरु	6	पांच स्वरूप को उत्सव नित्य लीलास्थ गोस्वामि तिलकायित श्री १०८ श्री गोवर्द्धनलालजी महाराज कृत।
११	शुक्र	7	वरूथिनी एकादशी व्रतम्। श्रीवल्लभाचार्यजी (श्रीमहाप्रभुजी) को उत्सव। (१५३५) श्री वल्लभाब्द ५४४ को प्रारम्भ।
१२	शनि	8	
१३	रवि	9	
१४	सोम	10	
३०	मंगल	11	

वल्लभाब्द ५४४			वैशाख शुक्लपक्षः विक्रमाब्द २०७८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	बुध	12	इष्टिः।
२	गुरु	13	
३	शुक्र	14	अक्षय तृतीया चन्दनयात्रा त्रेतायुगादि जलकुम्भदानम्।
३	शनि	15	
४	रवि	16	
५	सोम	17	
६	मंगल	18	
७	बुध	19	तिलकायित श्री लालगिरधारीजी महाराज को उत्सव (१६६०)
८	गुरु	20	
६	शुक्र	21	
१०	शनि	22	
११	रवि	23	मोहिनी एकादशी व्रतम् ।
१३	सोम	24	
१४	मंगल	25	श्री नृसिंह जयन्ती व्रतम्। आज सूं ले के ज्येष्ठ कृष्ण १३ मंगल प्रातः ६/४२ तक सूर्य को रोहिणी नक्षत्र है। तासूं इन दिन्न में श्री के अंग में चन्दन धरावनो प्रशस्त है।
१५	बुध	26	

वल्लभाब्द ५४४	**ज्येष्ठ (गु. वैशाख) कृष्णपक्षः**		विक्रमाब्द २०७८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	गुरु	27	इष्टिः।
२	शुक्र	28	चार स्वरूप को उत्सव ति. श्री दाऊजी महाराज कृत।
३	शनि	29	कली के शृंगार को आरम्भ।
५	रवि	30	
६	सोम	31	
७	मंगल	1	जून
८	बुध	2	
९	गुरु	3	
१०	शुक्र	4	
११	शनि	5	
११	रवि	6	अपरा एकादशी व्रतम्।
१२	सोम	7	
१३	मंगल	8	
१४	बुध	9	
३०	गुरु	10	

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	शुक्र	11	इष्टिः।
२	शनि	12	
३	रवि	13	
४	सोम	14	
५	मंगल	15	श्री के नाव को मनोरथ।
६	बुध	16	
७	गुरु	17	
८	शुक्र	18	
९	शनि	19	
१०	रवि	20	श्री गंगादशमी, गंगादशहरा, श्री यमुनाजी को उत्सव माने है।
११	सोम	21	निर्जला एकादशी व्रतम्।
१२	मंगल	22	
१३	बुध	23	तिलकायित श्री गिरधारीजी महाराज को उत्सव। (१६००), स्नान को जल भरनो सांझ कूं जल को अधिवासन करनो।
१५	गुरु	24	ज्येष्ठाभिषेक (स्नान यात्रा)।

वल्लभाब्द ५४४			**आषाढ़ (गु. ज्येष्ठ) कृष्णपक्षः** विक्रमाब्द २०७८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शुक्र	25	इष्टिः।
२	शनि	26	
३	रवि	27	
४	सोम	28	
५	मंगल	29	
६	बुध	30	
७	गुरु	1	जुलाई
८	शुक्र	2	
९	शनि	3	
१०	रवि	4	
११	सोम	5	योगिनी एकादशी व्रतम्।
१२	मंगल	6	
१३	बुध	7	
१४	गुरु	8	
३०	शुक्र	9	तिलकायित बड़े श्री गिरिधारीजी महाराज को उत्सव (१८२५)
३०	शनि	10	इष्टिः

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	रवि	11	रथयात्रा।
२	सोम	12	
३	मंगल	13	
४	बुध	14	
५	गुरु	15	श्री द्वारकाधीश जी को पाटोत्सवः।
६	शुक्र	16	कसूंभा छठ। षष्ठी पण्डगू। तिलकायित श्री गोविन्दजी महाराज गादी बिराजे सो उत्सव तथा तिलकायित **श्री इन्द्रदमन जी (श्री राकेश जी)** महाराज गादी बिराजे (२०५७)
८	शनि	17	
९	रवि	18	
१०	सोम	19	बैंगन दशमी।
११	मंगल	20	देवशयनी एकादशी व्रतम्। चातुर्मास्य नियमारम्भः। कली के शृंगार पूर्ण, पूज्यपाद ति. महाराज श्री की आज्ञा से परिवर्तन एवं परिवर्द्धन किया जा सकेगा।
१२	बुध	21	
१३	गुरु	22	
१४	शुक्र	23	
१५	शनि	24	इष्टिः। पर्वात्मक उत्सव चातुर्मास्य नियमारम्भः। एकादशी कूं न भयो होय तो द्वादशी अथवा पूर्णिमा के दिन करनो तामे पूर्णिमा मुख्य। इष्टिः।

तिथि	वार	दि.	उत्सव
२	रवि	25	हिन्दोलारम्भः।
३	सोम	26	
४	मंगल	27	श्री चन्द्रमाजी को पाटोत्सवः।
५	बुध	28	
६	गुरु	29	
७	शुक्र	30	
८	शनि	31	जन्माष्टमी की बधाई।
८	रवि	1	अगस्त
९	सोम	2	
१०	मंगल	3	तिलकायित श्री गोवर्द्धनेश जी महाराज को उत्सव। हाण्डीउत्सव (१७६३)।
११	बुध	4	कामिका एकादशी व्रतम्।
१२	गुरु	5	
१३	शुक्र	6	
१४	शनि	7	
३०	रवि	8	हरियाली अमावस।

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	सोम	9	इष्टिः।
२	मंगल	10	
३	बुध	11	ठकुरानी तीज मधुस्रवा।
४	गुरु	12	
५	शुक्र	13	नाग पंचमी।
६	शनि	14	
७	रवि	15	
८	सोम	16	सात स्वरूप को उत्सव। नित्य लीलास्थ गोस्वामी तिलकायित १०८ श्री गोविन्दलालजी महाराज कृत। नवमी को क्षय होवे सूं आज।
१०	मंगल	17	
११	बुध	18	पुत्रदा एकादशी व्रतम्। पवित्रारोपणं प्रातः शृंगार में याही दिन सात स्वरूप कूं पवित्रा धरायवे को विशेष उत्सव। नित्य लीलास्थ गोस्वामी तिलकायित १०८ श्री गोविन्दलाल जी महाराज कृत।
१२	गुरु	19	गुरुओं को पवित्रा धराना।
१३	शुक्र	20	
१४	शनि	21	ऋग्वेदीन की श्रावणी। श्री विट्ठलेशराय जी महाराज को उत्सव (१६५७)।
१५	रवि	22	रक्षाबन्धनं सायं उत्थापन में ५ बजके ३३ मिनिट पूर्व, गुसांई जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गिरधरजी के लालजी श्री दामोदरजी महाराज को उत्सव (१६३२) आपस्तम्भ हिरण्य केशीय बोधायन काण्व माध्यन्दिन प्रभृति, सर्व यजुर्वेदीन तथा अथर्ववेदीन की श्रावणी।

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	सोम	23	इष्टिः। गोस्वामी तिलकायित श्री १०८ श्री गोवर्द्धनलालजी महाराज को उत्सव (१६१७) (हेम हिन्दोला)।
२	मंगल	24	हिन्दोला विजय
३	बुध	25	कज्जली तीज।
४	गुरु	26	
५	शुक्र	27	
६	शनि	28	
७	रवि	29	शयन में षष्ठी को उत्सव। विष्णुस्वामि प्राकट्योत्सव।
८	सोम	30	जन्माष्टमी व्रतम्।
९	मंगल	31	नन्दमहोत्सव।
१०	बुध	1	सितम्बर
१०	गुरु	2	
११	शुक्र	3	अजा एकादशी व्रतम्।
१२	शनि	4	
१३	रवि	5	
१४	सोम	6	काकावल्लभजी को उत्सव (१७०३)।
३०	मंगल	7	इष्टिः। राधाष्टमी की बधाई, कुशग्रहणी अमावस।

तिथि	वार	दि.	उत्सव
२	बुध	8	
३	गुरु	9	सामवेदीन की श्रावणी।
४	शुक्र	10	गणेशचतुर्थी
५	शनि	11	ऋषिपंचमी। द्वितीयस्वरूपोत्सव।
६	रवि	12	ति. श्री विट्ठलेशजी महाराज को उत्सव (१७४४)।
७	सोम	13	
८	मंगल	14	राधाष्टमी।
९	बुध	15	
१०	गुरु	16	
११	शुक्र	17	परिवर्तिनी एकादशी व्रतम् (दान एकादशी) नवलक्ष ग्रंथकर्त्ता श्री पुरुषोत्तमजी महाराज को उत्सव (१७१४), वामन द्वादशी विष्णुशृंखल योग।
१२	शनि	18	
१४	रवि	19	
१५	सोम	20	सांझी को आरम्भ।

वल्लभाब्द ५४४	आश्विन (गु.भाद्रपद) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०७८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	मंगल	21	इष्टिः। श्राद्धपक्ष को आरम्भ ताको निर्णय पृ. २६ एवं श्राद्धपक्ष को संकल्प पृ. २७ पर लिख्यो है।
२	बुध	22	
२	गुरु	23	
३	शुक्र	24	
४	शनि	25	
५	रवि	26	श्री हरिरायजी को उत्सव (१६४७)
६	सोम	27	
७	मंगल	28	
८	बुध	29	श्री महाप्रभुजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथजी के पुत्र श्री पुरुषोत्तमजी को उत्सव (१५८७)।
९	गुरु	30	
१०	शुक्र	1	अक्टूबर
११	शनि	2	इन्दिरा एकादशी व्रतम् (महादान)।
१२	रवि	3	श्री महाप्रभुजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथजी को उत्सव (१५६७)
१३	सोम	4	श्री गुसांईजी के तीसरे लाल जी श्री बालकृष्णजी को उत्सव (१६०६)
१४	मंगल	5	
३०	बुध	6	सर्वपितृ अमावस, कोट की आरती और सांझी की समाप्ति।

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	गुरु	7	इष्टिः। नवरात्रारम्भः, मातामह श्राद्ध।
२	शुक्र	8	
३	शनि	9	श्री दामोदरजी (श्री दाऊजी) महाराज को उत्सव (दुहेरा मनोरथ) (१६५४)। चतुर्थी को क्षय होयवे सूं आज।
५	रवि	10	
६	सोम	11	
७	मंगल	12	सरस्वती पूजनारम्भः।
८	बुध	13	
६	गुरु	14	सरस्वती विसर्जनम्, प्रातः ६ बजके ३७ मिनट के अनन्तर अथवा १० शुक्र कूं प्रातः ६ बजके १७ मिनट सूं पूर्व।
१०	शुक्र	15	दशहरा (विजयदशमी)। श्री गिरधरजी के प्रथम लालजी श्री मुरलीधरजी को उत्सव।
११	शनि	16	पाशांकुशा एकादशी व्रतम्।
१२	रवि	17	
१३	सोम	18	श्री बालकृष्णजी को पाटोत्सवः।
१४	मंगल	19	शरद पूर्णिमा (रासोत्सवः)।
१५	बुध	20	कार्तिक स्नानारम्भः।

वल्लभाब्द ५४४	कार्तिक (गु. आश्विन) कृष्णपक्षः		विक्रमाब्द २०७८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	गुरु	21	इष्टिः।
२	शुक्र	22	
३	शनि	23	
४	रवि	24	
५	सोम	25	
५	मंगल	26	
६	बुध	27	
७	गुरु	28	
८	शुक्र	29	
९	शनि	30	
१०	रवि	31	
११	सोम	1	नवम्बर, रमा एकादशी व्रतम्।
१२	मंगल	2	
१३	बुध	3	धनतेरस, रूप चतुर्दशी (अभ्यंग) ३० गुरु के सूर्योदय से पूर्व चतुर्दशी में ही करनो।
३०	गुरु	4	दीपावली (दीपोत्सव) हटड़ी (गोकर्ण जागरणम्) कान जगाई।

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	शुक्र	5	अन्नकूटोत्सवः। गोवर्द्धन पूजा। गुर्जराणां २०७८ वर्षारम्भः। इष्टिः।
२	शनि	6	यम द्वितीया (भाईदूज)।
३	रवि	7	
४	सोम	8	
५	मंगल	9	
६	बुध	10	
७	गुरु	11	श्री नवनीत प्रभु को व्रज में पधरायवे को विशेष उत्सव। गो.ति. १०८ श्री इन्द्रदमन जी (श्री राकेश जी) महाराज कृत (२०६३), गोपाष्टमी अष्टमी को क्षय होयवे सूं आज।।
६	शुक्र	12	अक्षयनवमी । कृतयुगादि । कूष्माण्डदानम् ।
१०	शनि	13	
११	रवि	14	
१२	सोम	15	प्रबोधिनी एकादशी व्रतम् देवोत्थापनं प्रातः शृंगार में। श्री गुसांईजी के प्रथम लालजी श्री गिरधरजी को उत्सव (१५९७) तथा पंचमलाल जी श्री रघुनाथजी को उत्सव (१६११)।
१२	मंगल	16	
१३	बुध	17	
१४	गुरु	18	ति. श्री गोविन्दजी महाराज को उत्सव (१८७६)।
१५	शुक्र	19	चार स्वरूप को उत्सव। नित्य लीलास्थ गोस्वामी तिलकायित श्री १०८ श्री गोविन्दलाल जी महाराज कृत चातुर्मास्य तथा कार्तिक के नियम की समाप्ति। गोपमासारम्भः।

वल्लभाब्द ५४४			**मार्गशीर्ष (गु. कार्तिक) कृष्णपक्षः** विक्रमाब्द २०७८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	शनि	20	व्रतचर्या अथवा गोपमासारम्भः। इष्टिः।
२	रवि	21	
३	सोम	22	
४	मंगल	23	छः स्वरूप को उत्सव। तिलकायित श्री दाऊजी (महाराज) कृत।
५	बुध	24	
६	गुरु	25	
७	शुक्र	26	गो.ति. १०८ श्री गोविन्दलालजी महाराज को उत्सव (१९८४)
८	शनि	27	श्री गुसांई जी के दूसरे लालजी श्री गोविन्दरायजी को उत्सव (१५९९)।
९	रवि	28	
१०	सोम	29	घटा को आरम्भ (हरिघटा)।
११	मंगल	30	उत्पत्ति एकादशी व्रतम्।
१२	बुध	1	दिसम्बर, श्री नवनीत प्रभु कूं व्रज सूं नाथद्वारा निजमंदिर में पधरायवे को उत्सव। गो.ति. १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज कृत (२०६३)।
१३	गुरु	2	श्री गुसांईजी के सातवे लालजी श्री घनश्यामजी को उत्सव (१६२८)
१४	शुक्र	3	
३०	शनि	4	इष्टिः। श्यामघटा।

वल्लभाब्द ५४४	मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः		विक्रमाब्द २०७८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	रवि	5	दूज को चन्दा। दूज को क्षय होयवे सूं आज।
३	सोम	6	
४	मंगल	7	
५	बुध	8	श्री मदनमोहनजी को पाटोत्सव।
६	गुरु	9	
७	शुक्र	10	श्री गुसांईजी के चतुर्थ लालजी श्री गोकुलनाथजी को उत्सव (१६०८)।
८	शनि	11	सातस्वरूप को उत्सव। श्री गोवर्द्धनेशजी महाराज कृत।
६	रवि	12	श्री गुसांईजी के उत्सव की बधाई (लालघटा)।
१०	सोम	13	
११	मंगल	14	मोक्षदा एकादशी व्रतम्।
१२	बुध	15	
१३	गुरु	16	धनुर्मासारम्भः।
१४	शुक्र	17	
१४	शनि	18	
१५	रवि	19	छप्पन भोग बलदेवजी को उत्सव कितनेक माने है। गोपमास की समाप्ति। इष्टिः

वल्लभाब्द ५४४			**पौष (गु. मार्गशीर्ष) कृष्णपक्षः** विक्रमाब्द २०७८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	सोम	20	नित्य लीलास्थ गोस्वामि तिलक श्री १०८ श्री दाऊजी (श्री राजीवजी) महाराज को उत्सव (२००५)।
२	मंगल	21	
३	बुध	22	
४	गुरु	23	
५	शुक्र	24	
६	शनि	25	
७	रवि	26	श्री गुसांईजी के ज्येष्ठ पौत्र श्री गोविन्दजी के पुत्र श्री कल्याणरायजी को उत्सव (१६२५)।
८	सोम	27	
९	मंगल	28	श्री मत्प्रभुचरण श्री विट्ठलनाथजी को उत्सव (१५७२)।
१०	बुध	29	
११	गुरु	30	सफला एकादशी व्रतम्। फल अवश्य भोग धरनो, फलन के दान अवश्य करनो। तिलकायित श्री गोविन्दजी महाराज को उत्सव (१७६६)।
१२	शुक्र	31	
१४	शनि	1	जनवरी सन् २०२२ का प्रारम्भ।
३०	रवि	2	गोस्वामि तिलक श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज के पुत्र चि.गो. १०५ **श्री भूपेशकुमारजी (श्री विशाल बाबा)** को जन्मदिन (२०३७)।

वल्लभाब्द ५४४			**पौष शुक्लपक्षः** विक्रमाब्द २०७८
तिथि	**वार**	**दि.**	**उत्सव**
१	सोम	3	इष्टिः ।
२	मंगल	4	
३	बुध	5	
४	गुरु	6	
५	शुक्र	7	
६	शनि	8	नित्य लीलास्थ गो. श्री १०८ श्री दामोदरलाल जी महाराज को उत्सव (१६५३)।
७	रवि	9	
८	सोम	10	
९	मंगल	11	
१०	बुध	12	
११	गुरु	13	पुत्रदा एकादशी व्रतम् (भोगी धनुर्मास की समाप्ति)।
१२	शुक्र	14	मकर संक्रान्तिः। तिलवा उत्थापन में ता पीछे दान श्राद्धादि करने। पुण्यकाल दिन के २ बजके ३० मिनिट सूं लेके सूर्यास्त सायं ६ बजके ५ मिनिट तक। तामे भी संक्रान्ति के पास के २ घण्टा अति मुख्य पुण्यकाल है। अबके यह संक्रान्ति आज २ बजके ३० मिनट पर बैठे है। उत्तरायण।
१३	शनि	15	
१४	रवि	16	
१५	सोम	17	माघ स्नानारम्भः।

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	मंगल	18	इष्टिः।
२	बुध	19	
२	गुरु	20	
३	शुक्र	21	
४	शनि	22	
५	रवि	23	
६	सोम	24	पीली घटा।
७	मंगल	25	बड़े दामोदरजी (श्री दाऊजी) महाराज को उत्सव (१७११) अष्टमी को क्षय होयवे सूं आज।
९	बुध	26	
१०	गुरु	27	
११	शुक्र	28	षट्तिला एकादशी व्रतम्। तिल की वस्तु अवश्य भोग धरनो। तिल के दान भक्षणादि करने।
१२	शनि	29	
१३	रवि	30	
१४	सोम	31	
३०	मंगल	1	फरवरी। इष्टिः।

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	बुध	2	
३	गुरु	3	
४	शुक्र	4	श्री मुकुन्दरायजी को पाटोत्सवः।
५	शनि	5	वसन्तपंचमी।
६	रवि	6	
७	सोम	7	
८	मंगल	8	
८	बुध	9	
६	गुरु	10	
१०	शुक्र	11	
११	शनि	12	जया एकादशी व्रतम्।
१२	रवि	13	
१३	सोम	14	
१४	मंगल	15	
१५	बुध	16	माघ स्नान की समाप्ति। होरी डांडो दण्डारोपण, आज सूर्यास्तान्तरम् सायं ६ बजके २८ मिनिट पश्चात्। याही समय धमार को आरम्भ, रोपणी को उत्सव।

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	गुरु	17	इष्टिः।
२	शुक्र	18	
३	शनि	19	
४	रवि	20	
५	सोम	21	
६	मंगल	22	
७	बुध	23	श्रीनाथजी को पाटोत्सवः।
८	गुरु	24	
९	शुक्र	25	
१०	शनि	26	
११	रवि	27	विजया एकादशी व्रतम्।
१३	सोम	28	
१४	मंगल	1	मार्च
३०	बुध	2	

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	गुरु	3	इष्टिः।
२	शुक्र	4	
३	शनि	5	
४	रवि	6	
५	सोम	7	
६	मंगल	8	
७	बुध	9	श्री मथुरेशजी को पाटोत्सवः। **श्री गोस्वामी तिलकायित १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज** को जन्मदिन (२००६)
८	गुरु	10	होलिकाष्टकारम्भः।
६	शुक्र	11	
६	शनि	12	
१०	रवि	13	
११	सोम	14	आमलकी (कुंज) एकादशी व्रतम्।
१२	मंगल	15	
१३	बुध	16	
१४	गुरु	17	होली, होलिका प्रदीपनं १५ शुक्रवार के सूर्योदयात् पूर्व।
१५	शुक्र	18	दोलोत्सव (डोल), धूलिवन्दन (धुरेण्डी)।

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	शनि	19	इष्टिः । द्वितीया पाट ।
२	रवि	20	
३	सोम	21	
५	मंगल	22	
६	बुध	23	
७	गुरु	24	गो.ति.१०८ श्री इन्द्रदमन जी (श्री राकेश जी) महाराज के पौत्र गो.चि.१०५ श्री भूपेश कुमार जी (श्री विशाल बावा साहब) के पुत्र **गो.चि. श्री लाल गोविन्द जी (श्री अधिराज बावा)** को जन्मदिन (२०७५)
८	शुक्र	25	
६	शनि	26	
१०	रवि	27	
११	सोम	28	पापमोचिनी एकादशी व्रतम्।
१२	मंगल	29	
१३	बुध	30	
१४	गुरु	31	
३०	शुक्र	1	अप्रेल, वर्षे हर्षः प्रकर्षः स्यात्। इष्टिः।

श्राद्धपक्ष को निर्णय

(आश्विन गु. भाद्रपद कृष्ण पक्ष - दिनांक 21.09.2021 से 07.10.2021 तक)

तिथि	वार	दि.	श्राद्ध
१	मंगल	21.09	प्रतिपदा (एकम्) को श्राद्ध
२	बुध	22.09	द्वितीया (दूज) को श्राद्ध
२	गुरु	23.09	तृतीया (तीज) को श्राद्ध
३	शुक्र	24.09	चतुर्थी (चौथ) को श्राद्ध एवं पिण्डरहित भरणी श्राद्ध
४	शनि	25.09	पंचमी (पाचम) को श्राद्ध
५	रवि	26.09	षष्ठी (छठ) को श्राद्ध
६	सोम	27.09	---
७	मंगल	28.09	सप्तमी (सातम) को श्राद्ध व व्यतीपात श्राद्ध
८	बुध	29.09	अष्टमी (आठम) को श्राद्ध
६	गुरु	30.09	नवमी (नवम) को श्राद्ध व अविधवा नवमी
१०	शुक्र	01.10	दशमी (दशम) को श्राद्ध
११	शनि	02.10	एकादशी (ग्यारस) को श्राद्ध
१२	रवि	03.10	द्वादशी (बारस) को श्राद्ध, सन्यासीन को श्राद्ध व मघा श्राद्ध
१३	सोम	04.10	त्रयोदशी (तेरस) को श्राद्ध
१४	मंगल	05.10	चतुर्दशी (चौदस) निमित्तक घायलन को श्राद्ध, जल शस्त्र आदि सूं मरण पायो होय उनके ही या दिन श्राद्ध
३०	बुध	06.10	अमावस तथा सर्वपितृ को श्राद्ध
आ.शु.१	गुरु	07.10	मातामह श्राद्ध

क्रमशः पृ.२७

विशेष : 1. जाकी मरण तिथि चतुर्दशी अथवा पूर्णिमा होय ताको महालय श्राद्ध अष्टमी, द्वादशी, अमावस्या, व्यतीपात या में सूं कोई भी दिन करनो प्रशस्त है।

2. सप्तमी मंगल को व्यतीपात योग होय वे सूं यह दिवस श्राद्धादिक में विशेष प्रशस्त है। कोई भी तिथि को श्राद्ध रहि गयो होय या रही जायवे को सम्भव होय तो ताको श्राद्ध या दिवस करनो।

।। इति श्राद्धपक्ष निर्णय समाप्त ।।

श्राद्धपक्ष को संकल्प

ॐ विष्णुः 3 श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रर्वत्तमान स्याद्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्री श्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरेऽष्टा विंशति तमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे भूर्लोके जंबूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गते ब्रह्मावर्तैक देशे अमुक देशे बौद्धावतारे आनन्दनाम्नि अष्टा सप्ततिः अधिक द्विसहस्त्र संख्या के वैक्रमाब्दे शकानुसारेण प्लव नाम संवत्सरे शरदृतौ आश्विन मासे (गुर्जर भाद्रपद मासे) कृष्णपक्षे अमुक तिथौ वासरान्वितायां नक्षत्र, योगे, करणे अमुक राशि स्थिते चन्द्रे, कन्या राशि स्थिते श्रीसूर्ये मकर राशि स्थिते श्री देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा राशि स्थान स्थितेषु सत्वेवं ग्रह गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ मम (नाम सम्बन्धोच्चारण) एतेषां यथानाम् गोत्र रूपाणां पुरुष विषये सपत्नीकानां स्त्रीविषये सभर्तृक सपत्न्याम् विधिना महालयापर पक्ष श्राद्धमथवा सकृन्महालया पर पक्ष श्राद्ध सदैव सद्यः करिष्ये।

।। इति श्राद्धपक्ष निर्णय समाप्त ।।

।। श्रीहरिः ।।

पुष्टिमार्ग और उसकी विशेषता

यद्यपि लोक में ज्ञान-कर्म और भक्ति ये तीनमार्ग अत्यन प्रसिद्ध हैं किन्तु गीता भागवत आदि में पुष्टि-प्रवाह और मर्यादा इन तीन मार्गों का भी वर्णन है इन तीनों मार्गों को आज तक किसीने प्रकट नहीं किये। इन तीनों का प्राकट्य प्रमाण एवं विवेचन के साथ श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु ने किया । इनका पूर्णरूप से विवेचन 'पुष्टि-प्रवाह-मर्यादा' नाम के ग्रन्थ में मिलता है । आपश्रीने उस में बताया है कि जिसप्रकार पुष्टि प्रवाह और मर्यादा ये मार्ग पृथक्-पृथक् हैं उसी प्रकार इन मार्गों के जीव उनके देह उनकी कार्य प्रणाली भी भिन्न भिन्न है तथा फल भी उनके भिन्न भिन्न ही हैं।

श्रीमद्भागवत में श्रीकपिलदेवजी ने अपनी माता देवहूतिजी से कहा था कि हे माता ! यह भक्तियोग मर्यादा आदि मार्गों के भेद से अनेक प्रकार का है 'भक्तियोगो बहुविधो मार्गेर्भामिनि भाव्यते' इसीप्रकार श्रीमद्भागवत के एकादशस्कन्ध में योगेश्वरों ने जहाँ भक्तों का भेद बताया है वहीं पर भक्ति के भेदों का भी वर्णन किया है, परन्तु श्रीमद्वल्लभाचार्यचरणों ने अपने 'पुष्टिप्रवाहमर्यादा' ग्रन्थ में 'भक्तिमार्गस्य कथनात् पुष्टिरस्तीति निश्चयः' यह कह कर पुष्टिमार्ग की सत्ताका दृढता के साथ प्रतिपादन किया है। उनका आशय यह है कि भागवत में कपिलदेवजी ने एवं योगेश्वरोंने जो भक्ति के प्रकार बतलाये हैं उनमें शुद्ध पुष्टि भक्ति का लक्षण न होने से उसे शुद्धपुष्टि नहीं कह सकते । अतः आपने शुद्धपुष्टि

का लक्षण बताने के लिये नारदपञ्चरात्र के भक्ति के लक्षण को उद्धृत किया है । माहात्म्यज्ञानपूर्वक सुदृढ सबसे अधिक स्नेह को भक्ति कहते हैं 'माहात्म्यज्ञानपूर्वस्तु सुदृढः सर्वतोऽधिकः। स्नेहो भक्तिरिति प्रोक्तस्तया मुक्तिर्नचान्यथा ।।' वास्तव मे देखा जाय तो भक्ति का लक्षण इतना बड़ा नहीं है मुख्य लक्षण तो 'स्नेहो भक्तिः' इतना ही है । परन्तु माहात्म्यज्ञानपूर्वक ऐसा जो स्नेह का विशेषण बताया है उसका अभिप्राय तो यह है कि श्रीमदाचार्य चरणों द्वारा प्रकटित भक्तिमार्ग मे जो प्रवृत्त होता है उसका भगवान् में जब तक सुदृढ़ और सबसे अधिक स्नेह नहीं होता तब तक सेवा आदि के करने में कहीं अपराध न बन जाय इसके लिये भगवान् के माहात्म्य ज्ञान का उपयोग होता है।

जब सुदृढ़ स्नेह उत्पन्न हो जाता है तब तो वह माहात्म्य ज्ञान अपने आप निवृत्त हो जाता है । अतएव पूर्णरूपसे माहात्म्य के ज्ञान वाली माता श्रीदेवकीजी में जिस समय शुद्धपुष्टिमार्गीय स्नेह उत्पन्न होगया उस समय भगवान् का माहात्म्य तिरोहित होगया (छिपगया) अतः भगवान् से कहने लगी – हे भगवान् ! मैं आपके कारण अधीरबुद्धि हो गयी हूँ और कंस से डर रही हूँ । 'समद्विजे भवद्धेतोः कंसादहमधीरधीः' ऐसा बोली। यदि देवकीजी में स्नेह की उत्पत्ति के अनन्तर भी भगवान् के माहात्म्य का ज्ञान बना रहता तो उसे भय क्यों लगता ! भगवान् के सामने कंस क्या था।

इसी प्रकार वहीं व्रज के अन्दर जिनका सुदृढ़ स्नेह हो गया ऐसे व्रजवासियोंने सात वर्ष की अवस्था वाले भगवान् को जो किसीसे उठ नहीं सकता ऐसे गोवर्द्धन पर्वत को उठाकर उसके

द्वारा भूख प्यास और निद्रा आदि असह्य शरीर धर्मो की निवृत्ति पूर्वक सपरिकर व्रज की रक्षा की और अपने आत्मयोग के प्रभावसे गोवर्द्धन के ऊपर बैठे हुए पशुपक्षी आदि की रक्षाकी इस असाधारण माहात्म्य को देखने के अनन्तर भी जिस समय वृष्टि निवृत्त हो गयी उस समय उन व्रजवासियों को गोवर्द्धन से बाहर निकाला और गोवर्द्धन जहाँ पूर्व मे था वहीं पर रख दिया। उस समय बाहर आते ही दृढ स्नेह के कारण प्रत्यक्ष देखे हुए भगवान् के माहात्म्य को तो भूल गये और उन व्रजवासियोंने भगवान् के दही का तिलक कर उसके ऊपर अक्षत चढ़ाये तथा जलके पात्र को घुमाकर उस जल के पीने के अनन्तर भगवान् को आशीर्वाद दिया।

इस प्रकार उनने स्नेह का ही कार्य किया यदि स्नेह के अनन्तर भी माहात्म्यज्ञान उनमें बना रहता तो वे भगवान् की प्रार्थना एवं उन्हें नमन करते, इसी को वहाँ कहा है 'तं प्रेमवेगान्निभृता व्रजौकसः' इसलिये जबतक सुदृढ़ स्नेह उत्पन्न नहीं होता तभी तक माहात्म्यज्ञान का उपयोग होता है। सुदृढ़ स्नेह को उत्पत्ति के अनन्तर माहात्म्यज्ञान का कोई उपयोग नहीं रहता।

इसी बात को भक्तिमीमांसा में कहा है। वहाँ पहले तो 'अथातो भक्तिजिज्ञासा' ऐसा कह कर कहा है 'सा परानुरक्तिरीश्वरे' ईश्वर में सबसे अधिक स्नेह को भक्ति कहते हैं। वहाँ यह नहीं कहा कि पहले भक्ति में माहात्म्यज्ञान का होना आवश्यक है। जहाँ परम अनुराग हो जाता है वहाँ परम अनुराग की ही सब प्रकार से प्रबलता रहती है उस अनुराग में माहात्म्यज्ञान का होना आवश्यक नहीं है। इसीलिये तो श्रीगोकुल में मिट्टी खाने का प्रसंग

जब आता है वहाँ जब भगवान् अपना मुंह खोलते हैं उस समय श्रीयशोदाजी सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का दर्शन भगवान् के मुख में करती हैं उससे उन्हें भगवान् के माहात्म्य का पूर्णरूपसे ज्ञान हो जाता है तथापि परम अनुराग के कारण वह माहात्म्य छिप जाता है । पुत्रभाव ही वहाँ प्रकट रहता है। इसलिये 'माहात्म्यज्ञान आदि उपाधिसे रहित साक्षात् धर्मी में ही सुदृढ़ सबसे अधिक जो ज्ञान आदि से हटाया न जा सके ऐसा अगणित आनन्दरूप अतुल्यातिशय ऐसा जो स्नेह है। वह भक्ति है' यह भक्ति का वास्तविक लक्षण है। इस प्रकार के भक्तिमार्ग का जब प्रमाणपूर्वक निरूपण मिलता है इससे पुष्टिमार्ग भी है ऐसा निश्चित् होता है। इसीलिये तो श्रीगोकुल में गोवर्द्धन धारण के प्रस्ताव में भगवान् ने यह प्रतिज्ञा की कि जिनने मेरी शरण ग्रहण कर ली है, जो मुझे ही अपना स्वामी मानते हैं, उन मेरे आत्मीयों की रक्षा केवल मैं ही करता हूँ। तस्मान्मच्छरणं गोष्ठं मन्नाथ मत्परिग्रहं गोपापे स्वात्मयोगेन' ऐसी प्रतिज्ञा कर सात दिन तक गोवर्द्धन को धारण किया।

सात दिन तक धारण करने का अभिप्राय यह था कि लोकों में जीवों के रक्षक देवता, ऋषि, पितर, आत्मा आत्मीय, ऐहिक और पारलौकिक ये सात प्रसिद्ध हैं, इन सातों की रक्षा से उन्हें हटा कर उनमें अपना सम्बन्ध स्थापित कर रक्षा की । अतः जिनको प्रभु अपना आत्मीय समझते हैं और जिनकी रक्षा आदि सब कार्य स्वयं प्रभु ही करते हैं यह ही पुष्टि का स्वरूप हैं इसे बताने के लिये आचार्य चरणों ने कहा है 'पुष्टिरस्तीति निश्चयः'। तात्पर्य यह है कि पुष्टि मे भगवान् और भक्त आपस में सम्बन्धी बन जाते हैं।

पुष्टिमार्गीय भक्त की पहचान क्या है इस विषय में श्रीहरिराय महाप्रभु ने अपने 'पुष्टिमार्ग लक्षणानि' ग्रन्थ में उनका परिचय दिया है। उस ग्रन्थ में बीस श्लोक हैं । उनमें से कुछ श्लोकों का आशय यहाँ लिखा जाता है- 'फल की प्राप्ति में सब प्रकार के साधनों से रहित होना ही जहाँ साधन है, उसे पुष्टिमार्ग कहते हैं' 'जहाँ भगवान् के अनुग्रह से ही लौकिक एवं पारलौकिक फल की सिद्धि हो उसे पुष्टिमार्ग कहते हैं। 'जहाँ जीव के अङ्गीकार में योग्यता नहीं देखी जाती है वह पुष्टिमार्ग कहा जाता है' 'पुष्टिमार्गीय भक्त को लौकिक या वैदिक किसी सुख की अपेक्षा नहीं होती उसे तो केवल अपने स्वामी (श्रीभगवान्) के ही सुख की अपेक्षा होती है वह पुष्टिमार्ग है'। 'जो भगवान् के भक्त हैं उनमें भगवद्भाव होना और भगवान् के विरोधियों को अपना विरोधी समझना' उदासोनों में समता रखना पुष्टिमार्ग कहलाता है । इस मार्ग की पूर्ण जानकारी तो साम्प्रदायिक ग्रन्थों के अध्ययन से ही प्राप्त हो सकती है। यहाँ तो केवल उसका दिग्दर्शन मात्र कराया है, प्रवाह मार्ग क्या है, मर्यादामार्ग क्या है, उनमें कितने प्रकार के भेद होते है, यह सब तो अध्ययन से ही ज्ञात हो सकेगा। इतिशम्।

लेखक :-

त्रिपाठी यदुनन्दन नारायण जी शास्त्री

विद्याविभागाध्यक्ष विद्याविभाग मन्दिर मण्डल

नाथद्वारा (राज.) ३१३३०१

सुबोधिनी से संग्रहीत उपदेश

१. जिनके हृदय में भगवान् सदा आविर्भूत रहते हैं वे जो भी कुछ कहते हैं अथवा जो भी कुछ विचार करते हैं सत्य हो जाता है।

२. अखिल विश्व में भगवान् की भावना करने वाला मानव विश्व विजयी बन जाता है।

३. भगवान् के प्रसन्न होने पर अखिल विश्व प्रसन्न हो जाता क्योंकि वहीं सर्वरूप हैं।

४. जिसका अन्तःकरण सब दोषों से मुक्त है। वह भगवच्चरणारविन्द को कभी भी नहीं भूलता।

५. भगवान् के हृदय में नहीं रहने पर मानव की बुद्धि खराब होती है।

६. जो भगवत्सम्बन्धी (ब्रह्मसम्बन्धी) बन जाता है उस भगवान् का प्रतिक्षण नवीन-नवीन अनुग्रह होता रहता है ।

७. भगवद्भक्तों के सङ्ग से दुर्भाग्य भी सौभाग्य में परिणत हो जाता है।

८. जब बुद्धि बिगड़ जाती है तब सभी साधन व्यर्थ रहते है और महापुरूष भी उस समय नहीं करने योग्य कार्यों को कर बैठते हैं।

इतिशम्

वर्तमान गोस्वामि बालकन के जन्म दिन की गुर्जरमासानुसार सूचना

श्री नाथद्वारा

फा.शु.७	गोस्वामि तिलकायित श्री १०८ **श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेश जी) महाराज,** श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) के लालजी १
मार्ग.कृ.३०	चि.गो.श्री भूपेशकुमारजी **(श्री विशाल बावा),** चि.गो. श्री विशाल बावा के लालजी १
फा.कृ.७	गो.चि. लाल गोविन्दजी **(श्री अधिराज बावा)**
आ.कृ.१३	गो. कल्याणराय जी गो. कल्याणराय जी के लालजी २
पौ.कृ.६	चि. श्रीहरिरायजी
अश्वि.शु.६	चि. श्रीवागधीशजी
	चि.हरिरायजी के लालजी २
माघ शु.१३	चि.श्री वदान्य राय जी
फा.शु.३	चि. द्विजराज जी
पौष शु.५	गो. श्री गोकुलोत्सव जी श्री गोकुलोत्सव जी के लालजी १
फा.शु.४	चि. श्री व्रजोत्सवजी चि. व्रजोत्सव जी के लालजी १
वै.शु.१२	चि. व्रजेश्वरजी
वै.कृ.४	गो. दिव्येशजी
	गो. श्री दिव्येश जी के लाल जी २
चै.शु.१४	चि. श्री प्रिय व्रजराय जी
का.शु.१०	चि. श्री अनुश्रुत जी

कांकरोली

पौ.शु.१०	गो. श्रीवृजेशकुमारजी
चै.कृ.४	गो. पीताम्बरजी
वै.कृ.६	गो. त्रिलोकीभूषणजी
	श्री व्रजेशकुमारजी के लालजी २
ज्ये.शु.५	चि.पुरूषोत्तमजी
का.व.४	चि. द्वारकेशजी
	श्री पीताम्बरजी के लालजी १
ज्ये.शु.१४	चि. व्रजालंकारजी
	गो. त्रिलोकीभूषणजी के लालजी १

वै.कृ.१३	गो. चि. व्रजाभरणजी
	श्री पुरूषोत्तमजी के लालजी २
का.कृ.६	गो. श्रीव्रजभूषणजी
का.शु.१०	गो. चि. श्रीविट्ठलनाथजी
	श्री द्वारकेश जी के लालजी २
मा.व.१२	चि. आश्रयकुमार जी
ज्ये.सु.८	चि. शरणकुमार जी
	चि. आश्रयकुमार जी के लालजी १
का.कृ.४	चि. यदुराजजी
	चि. व्रजाभरण जी के लालजी १
भा.शु.२	चि.रणछोड़ राय जी
आ.सु.६	गो. रविकुमारजी गो. रविकुमारजी के लालजी २
श्रा.सु.३०	चि. अवतंस बावा
माघ व.४	चि. प्रियम बावा

कोटा-बम्बई जतीपुरा

वै.कृ.६	गो. लालमणीजी लालमणीजी के लालजी २
श्रा.शु.६	चि. गो. मिलनकुमारजी
चै.शु.६	चि. द्वारकेशलालजी
	श्री मिलनकुमारजी के लालजी १
श्रा.कृ.२	चि. कृष्णास्थ बावा

कोटा-कड़ी

भा.कृ.६	चि. व्रजेशकुमारजी
माघ.व.१०	गो. चि. घनश्यामलालजी
आसो.सु.१०	गो. दामोदरलालजी
चै.व.१२	गो. चि. वल्लभलालजी गो. वल्लभलालजी के लालजी १
आषा.सु.८	चि. पुरूषोत्तमजी
	घनश्यामलालजी के लालजी २
फा.शु.७	गो.चि. कृष्णकुमारजी गो.चि. कृष्णकुमारजी के लालजी १
पौ.व.११	गो.चि. व्रजपाललालजी

फा.शु.११	चि. कुंजेशकुमारजी गो. चि. कुंजेशकुमारजी के लालजी २
मार्ग.व.२	गो.चि. गोविन्दरायजी
आश्वि.व.३	गो.चि. गोकुलमणीजी
आसो.व.३	गो. विनयकुमारजी
आषा.व.४	गो. शरदकुमारजी
श्रा.सु.७	गो. त्रिलोकीभूषणजी त्रिलोकीभूषणजी के लालजी १
ज्ये.कृ.१	राजीवलोचनजी
	व्रजेशकुमारजी के लालजी ३
चै.शु.६	चि यदुनाथजी चि. यदुनाथजी के लालजी १
पौ.कृ.५	चि. प्रद्युम्नजी
कार्ति.सु.१०	चि. द्वारकेशजी
कार्ति.सु.७	चि. जयदेवजी चि. जयदेवजी के लालजी १
मार्ग कृ.१३	चि. व्रजराजजी
	चि. दामोदरलालजी के लालजी २
श्रा.व.१२	चि. हरिरायजी
	चि. हरिरायजी के लालजी १
माघ कृ.१३	चि. गोकुलेश्वरजी
ज्ये.व.१०	चि. दर्शन कुमारजी
	चि. दर्शनकुमार जी के लालजी २
ज्ये.व.४	चि. व्रजाधीशजी
फा.कृ.७	चि. व्रजाधीपजी
कामवन	
फा.सु.२	गो. श्री वल्लभलालजी गो. श्री वल्लभलालजी के लालजी २
भा.कृ.२	चि. श्री देवकीनंदनजी
श्रा.कृ.१०	चि. श्री विट्ठलनाथजी
कामवन/सूरत	
आ.कृ.१४	गो. श्री द्वारकेशलालजी गो.श्रीद्वारकेशलालजी के लालजी २
फा.शु.३	चि. श्री अनिरुद्धलालजी

श्रा.कृ.१३	चि. श्री कन्हैयालालजी
	चि. श्री अनिरुद्धलालजी के लालजी २
भा.कृ.४	चि. श्री गोविन्दजी
का.शु.७	चि. श्री गोकुलचन्द्र जी
	चि. श्री कन्हैयालालजी के लालजी १
का.शु.१०	चि. श्री जयदेवजी

कामवन/भावनगर

भा.शु.१	गो. श्री नवनीतलालजी
	गो. श्री नवनीतलालजी के लालजी १
का.शु.१	चि. श्री गोकुलेशजी

कामवन/घाटकोपर

का.कृ.११	गो. मुरलीधर जी गो. मुरलीधरलालजी के लालजी १
मार्ग.शु.४	चि. श्री जयदेवलालजी
चै.कृ.१३	गो. श्री रघुनाथलालजी गो. श्री रघुनाथलालजी के लालजी २
मार्ग.शु.६	चि. श्री गिरधरजी
श्रा.कृ.५	चि. श्री दामोदर जी,

कामवन

आष.सु.११	गो. ब्रजेशकुमारजी
	गो. ब्रजेशकुमारजी के लालजी १
श्रा.व.३	गो. चि. अनिरूद्धजी चि. अनिरूद्धजी के लाल जी १
फा.कृ.६	चि. रमणजी (रसेश जी)
श्रा.व.३	गो. गोपाललालजी
आसो.व.१२	गो. कल्याणरायजी
चै.सु.१५	गो. रघुनाथलालजी (गोकुल-मुम्बई)
	गो. रघुनाथजी के लालजी १
माघ सु.४	चि. योगेशकुमारजी चि. योगेशकुमारजी के लालजी २
आ.व.१३	चि. श्रीव्रजोत्सवजी

श्रा.कृ.३०	चि. व्रजपालजी
भा.सु.१४	गो. शिशिरकुमारजी
	गो. चि. गोपालजी के लालजी १
आसो.व.४	चि. लालजी
	गो.चि.कल्याणरायजी के लालजी १
भा.व.१	गो. चि. उपेन्द्रजी

गोकुल

का.व.१०	गो. देवकीनन्दनजी गो. देवकीनन्दन के लालजी २
मा.व.३०	चि. वल्लभलालजी
का.सु.२	चि. विठ्ठलनाथजी

वीरमगाम

आसो.व.१४	गो. रघुनाथ जी
आसो.व.६	गो. ब्रजेशकुमारजी गो. ब्रजेशकुमार जी के लालजी १
माघ व.६	चि. रसिकप्रितमजी
श्रा.व.११	गो. कन्हैयालाल जी गो. कन्हैयालालजी के लालजी १
श्रा.व.८	चि. श्रीगोकुलेशजी

सूरत

मार्ग.सु.११	गो. वल्लभलालजी
आषा.व.४	गो. गोपेश्वरजी
पौ.व.३	गो. मुकुन्दरायजी
	गो. वल्लभलालजी के लालजी १
आसो.व.१	चि. अनुरागजी
	गो. गोपेश्वरजी के लालजी १
फा.व.६	चि. वत्सलराजजी
	चि. अनुरागरायजी के लालजी १
आसो.व.७	चि. पुरूषोत्तमरायजी
	गो. मुकुन्दराय जी के लालजी १
आसो.कृ.१२	चि. पीताम्बर रायजी

बड़ोदरा, सूरत

चै.सु.११	गो. मथुरेशजी
पौ.व.५	गो. प्रभुजी
	गो. मथुरेशजी के लालजी २
भा.सु.६	चि. योगेशकुमारजी
भा.व.२	चि. द्रुमिलकुमारजी
	गो. द्रुमिलकुमारजी के लालजी १
	चि. व्रजराजकुमारजी

चापासेनी-जामनगर-नडियाद

ज्ये.सु.५	गो. हरिरायजी
फा.व.१४	गो. व्रजरत्नजी
पौष सु.६	गो. नवनीतरायजी
आषा.सु.८	गो. बालकृष्णजी
आषा.सु.१५	गो. मुकुट बावा
फा.व.१२	गो. शरदकुमारजी
फा.सु.१५	गो. उत्सवजी
आश्वि.शु.६	गो. पुरुषोत्तमलालजी
का.शु.४	गो. गोपेशरायजी
	चि. हरिरायजी के लालजी १
का.व.१२	चि. व्रजवल्लभजी
	गो. व्रजरत्नजी के लालजी १
अश्वि.सु.७	चि. गोकुलोत्सवजी
	गो. नवनीतलालजी के लालजी १
ज्ये.सु.१०	चि. अंजनरायजी
	बालकृष्णजी के लालजी १
पौ.सु.१	चि. प्रियांकजी

मथुरा

पौ.व.६	गो. प्राणवल्लभजी गो. प्राणवल्लभलालजी के लालजी २
का.शु.११	चि. व्रजवल्लभजी
चै.व.११	चि. जयवल्लभ जी
	चि. व्रजवल्लभजी के लालजी १
वै.कृ.११	चि. कृतार्थ बावा
भा.सु.५	गो. रसिकवल्लभजी

	गो. रसिकवल्लभ जी के लालजी २
मा.शु.५	चि. समर्पण बावा
आ.सु.६	चि. प्रागट्य कुमार जी
का.सु.६	गो. अक्षयकुमारजी
आषा.सु.१४	गो. शरदकुमारजी गो. शरदकुमारजी के लालजी ३
माघ व.६	चि. गोपाललालजी
	चि. गोपाललालजी के लालजी १
फा.कृ.१२	चि. अक्षतकुमारजी
का.सु.५	चि. व्रजभूषणलालजी
	चि. ब्रजभूषणलालजी के लालजी १
आश्वि.शु.४	चि. ऋषभकुमारजी
ज्ये.सु.११	गो. प्रबोधकुमारजी
	गो. प्रबोधकुमारजी के लालजी २

भा.सु.८	चि. अभिषेककुमारजी
	चि. अभिषेककुमारजी के लालजी १
आषा.कृ.१३	चि. रक्षितकुमारजी
भा.सु.४	चि. रत्नेशकुमारजी
	चि. रत्नेशकुमारजी के लालजी १
वै.शु.२	चि. यदुनाथजी
मार्ग.व.२	गो. संदीपकुमारजी
पौ.सु.६	गो. संजयकुमार जी
	गो. अक्षयकुमारजी के लालजी ३
आसो.सु.१	चि. प्रणयकुमारजी
	प्रणयकुमारजी के लालजी २
फा.शु.१२	गो.चि. श्रीअलंकारजी
फा.शु.७	गो.चि. वृजरायजी
पौ.व.६	चि. परितोषकुमारजी

मार्ग.व.८	चि. पंकजकुमारजी

वाराणसी

मार्ग.सु.२	श्याम मनोहरजी
	गो. श्याममनोहरजी के लालजी १
मार्ग.कृ.६	गो. चि. प्रियेन्दु बावा, गो. चि. प्रियेन्दु बावा के लालजी २
मार्ग.कृ.१३	चि. परिवृढ़ बावा
माघ.कृ.१०	श्री श्रृंगार बाबा

अहमदाबाद

का.सु.१२	चि. व्रजेन्द्रकुमारजी
	गो. व्रजेन्द्रकुमारजी के लालजी २
आसो.व.१०	चि. तिलक बावा
आश्वि.शु.१	गो.चि. आभरण बावा
	गो.चि. तिलक बावा के लालजी २

ज्ये.सु.२	गो. चि. निवेदन बावा
आ.व.१०	गो.चि. आभुषणजी बावा

मुम्बई

आ.सु.५	गो. मनमथरायजी
मार्ग.व.६	गो. नीरजकुमारजी
	गो. नीरजकुमारजी के लालजी १
वै.व.१४	चि. गोविन्दरायजी
	गो. गोपीनाथजी के लालजी १
का.व.१३	चि. रमेशचन्द्रजी
माघ सु.६	चि. रमेशचन्द्रजी के लालजी १
माघ व.६	गो. रघुनाथजी
	गो. रघुनाथजी के लालजी २
भा.सु.५	चि. गोपीनाथजी दिक्षीत
मार्ग.सु.२	चि. नागरमोहनजी

माघ व.६	गो. यदुनाथजी
फा.सु.१५	गो. गोकुलनाथजी
	गो. कृष्णजीवनजी के लालजी ५
पौ.व.४	गो. मधूसुदन जी
आषा.सु.२	गो. कृष्णकान्तजी
	चि. कृष्णकान्त जी के लालजी १
श्रा.शु.११	चि. गिरिधरलालजी
मार्ग.सु.४	गो. गोकुलनाथजी
आषा.सु.११	गो. ललितत्रिभंगीजी
	गो. ललितत्रिभंगीजी के लालजी १
फा.सु.८	चि. व्रजवल्लभलालजी
मार्ग.व.४	गो. हृषीकेशजी
	गो. हृषीकेशजी के लालजी २

आसो.सु.१	गो. राजीवलोचनजी
वै.सु.७	रविरायजी
	गो. द्वारकाधीशजी के लालजी २
वै.व.४	चि. योगेशकुमारजी
	चि. योगेशकुमारजी के लालजी १
भा.व.३०	चि. बालकृष्णलालजी
का.व.४	चि. कमलेशकुमारजी चि. कमलेशकुमारजी के लालजी १
फा.व.६	चि. मुकुन्दरायजी
आसो.सु.१	गो. मनमोहनजी
आषा.व.३०	गो. हिरण्यगर्भजी गो. हिरण्यगर्भजी के लालजी १
आ.कृ.११	चि. हैयंगवीनजी
	गो. मधुदसूदनजी के लालजी २

चै.सु.१०	चि. कृष्णचन्द्रजी
पौ.व.५	चि. वल्लभदीक्षितजी
आसो.सु.११	गो. गोपिकालंकारजी
	गो. गोपिकालंकारजी के लालजी २
मा.व.१०	चि. गो. श्री भक्तवत्सल बावा
फा.व.२	चि. गो. श्री तिलकराय बावा

कान्दीवली-मुम्बई

ज्ये.सु.२	गो. द्वारकेशलालजी
कार्ति.सु.७	गो. पुरूषोत्तमजी
	गो. पुरूषोत्तमजी के लालजी १
आसो.व.२	गो. श्री विट्ठलराय जी

मुम्बई विलेपार्ले

आसो.सु.३	गो. रसिकवल्लभजी
चै.सु.६	गो. महेन्द्रकुमारजी
	गो. रसिकवल्लभजी के लालजी १

आसो.सु.१३	चि. शिशिरकुमारजी
	चि. शिशिरकुमारजी के लालजी १
पौ.कृ.५	चि. मुरलीमनोहरजी

मुम्बई-वेरावल-पोरबन्दर

माघ सु.८	गो. माधवरायजी
मार्ग.सु.६	गो. चन्द्रगोपालजी
	गो. चन्द्रगोपालजी के लालजी १
श्रा.कृ.६	चि. अनिरूद्धलालजी
आसो.व.१४	गो. शैलेशकुमारजी
	श्री शैलेशकुमारजी के लालजी १
श्रा.सु.३	चि. लाडिलेशजी
	गो. माधवरायजी के लालजी १
आषा.व.४	चि. मुरलीधरजी

बोरीवली-जामखंभालिया

श्रा.व.१३	गो. राकेशकुमारजी
	गो. मुरलीधरजी के लालजी ३
का.व.१३	गो. त्रिभंगीलालजी
चै.व.११	गो. व्रजप्रियजी
माघ व.१०	गो. व्रजनाथलालजी
	गो. व्रजनाथलालजी के लालजी १
श्रा.सु.७	चि. ध्येयरायजी
वै.सु.१३	गो. राजीवलोचनजी
मार्ग.सु.२	गो. गोविन्दरायजी
	गो. गोविन्दरायजी के लालजी १
श्रा.सु.२	चि. रूचिरबाबा
ज्ये.सु.१५	गो. गोपिकालंकारजी
	गो. गोपिकालंकारजी के लालजी १
फा.सु.२	चि. गो. द्वारकेशलालजी
	गो. राजीवलोचनजी के लालजी ३
आषा.व.५	चि. देवकीनन्दनजी
	चि. देवकीनन्दनजी के लालजी १
चै.व.११	चि. गो. वेदांग बावा
ज्ये.सु.४	चि. कुंजरायजी
श्रा.कृ.३	चि. गो. गिरिधरजी
	गो. त्रिभंगीलालजी के लालजी १
का.सु.३	चि. यमुनेशकुमारजी

जूनागढ

श्रा.व.३	गो. दानीरायजी
	गो. दानीरायजी के लालजी ४

का.सु.५	चि. पुरूषोत्तमजी
आषा.सु.११	चि. व्रजेन्द्रकुमारजी
	चि. व्रजेन्द्रकुमार जी के लालजी ३
भा.व.१	चि. ब्रजनाथजी
आश्वि.व.१३	चि. मधुरेशजी
चै.शु.६	चि. कृष्णराय जी
का.शु.१५	चि. विशालकुमारजी

पूना-मद्रास

चै.सु.४	गो. अजयकुमार जी
	गो. अजयकुमार जी के लालजी १
भा.कृ.६	चि. वागधीशकुमारजी
फा.व.११	गो. भरतकुमारजी
	गो. भरतकुमारजी के लालजी १
वै.व.२	चि. यशोवर्द्धन जी

मांडवी, गोकुल, जूनागढ़, बम्बई, राजकोट, बड़ोदरा

वै.सु.१४	गो. रणछोड़लालजी
	गो. रणछोड़लालजी के लालजी १
फा.कृ.१३	चि. गोकुलनाथजी
माघ व.६	गो. अनिरूद्धलालजी
	गो. अनिरूद्धजी के लालजी १
वै.सु.१४	चि. रसिकरायजी
	चि. रसिकरायजी के लालजी १
श्रा.कृ.७	चि. अचिन्त्य जी
आ.कृ.६	गो. चन्द्रगोपालजी
का.सु.४	गो. भूषणजी
	गो. चन्द्रगोपालजी के लालजी २
का.सु.१२	चि. अन्वयजी
श्रा.सु.५	चि. प्रत्यय जी
	गो. भूषणजी के लालजी २

फा.कृ.३	चि. अव्ययजी
का.सु.८	चि. गोपालजी
वै.सु.६	गो. किशोर चन्द्रजी (जूनागढ)
	गो. किशोरचन्द्रजी के लालजी १
का.व.४	चि. व्रजेन्द्रजी
	चि. व्रजेन्द्रजी के लालजी २
का.कृ.२	चि. ब्रजवल्लभजी
पौ.कृ.७	चि. पुण्यश्लोकजी
पौ.सु.१२	गो. विट्ठलनाथजी (मुम्बई)
आश्वि.कृ.७	गो. श्री सांरगजी (बडोदरा)
	गो. श्री सारंगजी के लालजी १
फा.सु.१४	चि. उत्सव बावा

पोरबन्दर

वै.सु.७	गो. हरिरायजी हरिरायजी के लालजी १
मा.शु.११	चि. जयगोपालजी
	चि. जयगोपालजी के लालजी १
आश्वि.कृ.१	चि.भावनेशरायजी

मथुरा-पोरबन्दर

मार्ग.व.१०	गो. रसिकरायजी
पौ.कृ.८	श्री श्याम मनोहर जी
	गो.रसिकरायजी के लालजी २
वै.व.१०	चि. चन्द्रगोपालजी
माघ व.१२	गो. वसन्तकुमारजी
का.सु.६	गो. विशालकुमारजी
	गो. वसन्तकुमारजी के लालजी १
भा.व.१२	चि. श्रीकृष्णरायजी
फा.कृ.५	गो. अभिषेककुमारजी
	गो. अभिषेककुमारजी के लालजी १
चै.कृ.११	चि. द्वारकेशलालजी
वै.शु.३	गो. अक्षयकुमारजी
	गो. अक्षयकुमारजी के लालजी १
का.शु.६	चि.रमणेशजी
	गो. चन्द्रगोपालजी के लालजी १
आषा.सु.७	चि. मिलनकुमारजी
	चि. मिलनकुमारजी के लालजी ३
मार्ग.शु.८	चि. गोकुलनाथजी
आश्वि.कृ.६	चि. विट्ठलेशरायजी
आश्वि.शु.११	चि. मथुरेशजी

लीलास्थ गोस्वामि बालकन के उत्सव की गुर्जरमासानुसार सूचना

''श्रावण''

व.१	श्री गोवर्द्धनलालजी	नाथद्वारा
व.७	श्री रणछोड़लालजी	बम्बई
व.८	श्री कन्हैयालालजी	गोकुल
व.९	श्री कृष्णजीवनजी	चैन्नई
व.१२	श्री प्रद्युम्नलालजी	वेटद्वार
व.१४	श्री गोपाललालजी	कांकरोली
व.३०	श्री कन्हैयालालजी	बम्बई
सु.२	श्री वल्लभलालजी	बम्बई
सु.११	श्री गिरधारीलालजी	मुम्बई
सु.१२	श्री विट्ठलेशरायजी	चापासेनी
सु.१२	श्री गोकुलेशजी	जूनागढ़

''भाद्रपद''

सु.४	श्री पुरूषोत्तमलालजी	चापासेनी
सु.७	श्री व्रजरत्नलालजी	सूरत
सु.८	गो. व्रजजीवनजी	कान्दीवली मुम्बई
सु.९	श्री पुरूषोत्तमलालजी	चापासेनी
सु.१०	श्री दामोदरलालजी	बम्बई
सु.११	श्री व्रजवल्लभजी	जूनागढ
सु.१२	श्री गोकुलनाथजी	बम्बई
सु.१२	श्री अनिरूद्धलालजी	नडियाद
सु.१३	श्री पुरूषोत्तमलालजी	कोटा
व.१	श्री मदनमोहनजी	मुम्बई
व.३	श्री गोवर्द्धनलालजी	बम्बई
व.३	श्री दामोदरलालजी	मथुरा
व.४	श्री चन्द्रगोपालरायजी	बडौदरा सूरत

व.७	श्री वल्लभलालजी	बड़ौदा
व.७	श्री घनश्यामलालजी	सूरत
व.८	श्री मुरलीधरजी	कोटा
व.८	श्री मुरलीधरजी	बेटद्वार
व.१०	श्री व्रजनाथजी	विलेपार्ले
व.११	श्री नृसिंहलाल जी	शेरगढ़
व.१२	श्री गोविन्दरायजी	कोटा

''आश्विन''

सु.७	श्री हरिरायजी	मुम्बई
सु.११	श्री कृष्णकुमारजी	कामवन
व.३	श्री घनश्यामलालजी	मुम्बई
व.५	श्री व्रजनाथजी	जामनगर
व.६	श्री मगनलालजी	सूरत
व.१०	श्री व्रजरायजी श्री नटवरगोपालजी	अहमदाबाद

व.१०	श्री कन्हैयालालजी	मथुरा, पोरबंदर
व.१३	श्री व्रजपाललालजी	मथुरा
व.१४	श्री. जयदेवलाल जी	वीरगाम
व.१४	श्री प्रियव्रतरायजी	मुम्बई

''कार्त्तिक''

सु.१	श्री गोवर्द्धनेशजी	बम्बई
सु.१	श्री रमणलालजी	मथुरा
सु.३	श्री प्रदीपकुमारजी	मथुरा
सु.४	श्री मधुसूदनलालजी	अमरेली
सु.६	श्री पुरूषोत्तमलालजी	अमरेली
सु.७	श्री लालमणिजी	कोटा
सु.७	श्री जीवनेशजी	मुम्बई
सु.८	श्री गोपाललालजी	मथुरा
सु.१०	श्री गोकुलाधीशजी	बम्बई
सु.११	श्री श्यामसुन्दरजी	बम्बई

सु.१३	श्री गोविन्दरायजी	कामवन
सु.१४	श्री जीवनलालजी	कोटा
सु.१५	श्री गिरधरलालजी	काशी
व.२	श्री पुरूषोत्तमलालजी	जूना
व.७	श्री गोविन्दलालजी	नाथद्वारा
व.८	श्री राजेन्द्रकुमारजी	मथुरा
व.१०	श्री उत्तमश्लोकजी	मुम्बई
व.१४	श्री जयदेवजी	वीरमगाम

''मार्गशीर्ष''

सु.१३	श्री गिरधरलालजी	नाथद्वारा
सु.१४	श्री द्वारकेशलालजी	मांडवी
व.१	श्री दाऊजी (राजीवजी)	नाथद्वारा
व.३	श्री विठ्ठलनाथजी	चापासेनी
व.३०	श्री गोविन्दरायजी	पोरबंदर

'पौष''

सु.४	श्री गोकुलनाथजी	वेरावल
सु.५	श्री गोपेश्वरलालजी	नाथद्वारा
सु.६	श्री दामोदरलालजी	नाथद्वारा
सु.७	श्री रणछोड़लालजी	कोटा
सु.१०	श्री कल्याणरायजी	बम्बई
सु.१३	श्री वल्लभलालजी	बोरी., जाम.
व.६	श्री वल्लभलालजी	बम्बई
व.६	श्री विठ्ठलनाथजी	मथुरा
व.११	श्री रणछोड़लालाजी	राजकोट
व.१२	श्री व्रजभूषणलालजी	नड़ियाद

''माघ''

सु.४	श्री कृष्णकुमारजी	मथुरा
सु.६	श्री अनिरूद्धलालजी	मुम्बई
सु.१३	श्री घनश्यामजी	कामवन
व.२	श्री व्रजभूषणलालजी	कांकरोली
व.२	श्री नटवरलालजी	मांडवी
व.४	श्री नृत्यगोपालजी	मुम्बई
व.५	श्री कल्याणरायजी	सूरत

''फाल्गुन''

सु.३	श्री गिरधरजी	सूरत
सु.४	श्री गोकुलनाथजी	गोकुल
सु.८	श्री रमणजी	कामवन
सु.११	श्री गोविन्दरायजी	सूरत
सु.१२	श्री काकागिरधरजी	नाथद्वारा
सु.१३	श्री मुरलीमनोहरजी	मुम्बई
सु.१४	श्री मधुसुदनलालजी	सूरत
सु.१५	श्री माधवरायजी	पोरबंदर
व.५	श्री चिम्मनलाल जी	बम्बई
व.१३	श्री व्रजरायजी	अहमदाबाद
व.३०	श्री कृष्णचन्द्रजी	मुम्बई

''चैत्र''

सु.१०	श्री गोपाललालजी	कोटा-कड़ी
सु.१३	श्री मुरलीधरजी	काशी
सु.१४	श्री पुरुषोतमजी	मुम्बई
सु.१५	श्री मुरलीधरलालजी	बोरीवली
व.१४	गो.यशोदानन्दनजी	बोरीवली

''वैशाख''

सु.३	श्री देवकीनन्दनजी	कामवन
सु.६	श्री यदुनाथजी	मथुरा
सु.१०	श्री मुरलीमनोहरजी	बडोदरा
सु.११	श्री यदुनाथरायजी	जतीपुरा
सु.१५	श्री माधवरायजी	मुम्बई
व.१	श्रीद्वारकेशजी	पोरबन्दर
व.५	श्री रणछोड़लालजी	कोटा
व.७	श्री शरदकुमारजी	मथुरा, पोरबंदर
व.११	श्री देवकीनन्दनजी	इन्दौर
व.१२	श्री दीक्षितजी	बम्बई
व.१४	श्री व्रजाधीशजी	मुम्बई
व.१४	श्री विट्ठलेशरायजी	पोरबंदर
व.३०	श्री वागीशरणजी	बम्बई

''ज्येष्ठ''		
सु.१	गो. मथुरेशजी	वीरगाम
सु.४	श्री त्रिविक्रमरायजी	कोटा
सु.५	श्री जीवनजी	बम्बई
सु.८	श्री मुकुन्दरायजी	राजकोट
सु.६	श्री गिरधरजी	कोटा
सु.११	श्री कल्याणरायजी	मथुरा
सु.१२	श्री द्वारकेशलालजी	कोटा
सु.१३	श्री जीवनलालजी	पोरबंदर
सु.१४	श्री द्वारकेशलालजी	बम्बई
सु.१५	श्री जीवनलालजी	काशी
व.४	श्री गिरधरलालजी	कामवन
व.८	श्री घनश्यामलालजी	मांडवी
व.१२	श्री ब्रजरमणलालजी	मथुरा
व.१४	श्री वागधीशजी	अमरेली

''आषाढ़''		
सु.२	श्री मगनलालजी	वेरावल
सु.२	श्री गोपाललालजी	कामवन
सु.३	श्री गोपालालजी	कांकरोली
सु.३	श्री मथुरेशजी	मुम्बई
सु.३	श्री वल्लभलालजी	कामवन
सु.३	श्री दामोदरलालजी	चापां
सु.५	श्री दामोदरलालजी	राजकोट
सु.५	श्री विट्ठलेशरायजी	कां.मुम्बई
सु.८	श्री चिमनलालजी	मांडवी, गो.
सु.१२	श्री मथुरेशकुमारजी	मथुरा, पोरबंदर
सु.१३	श्री रघुनाथजी	जूनागढ़
सु.१४	गो. देवेन्द्रकुमारजी	नाथद्वारा
व.१	श्री गोकुलेशरायजी	जूनागढ़
व.३	श्री नटवरगोपालजी	(मु.-वेरावल - पोरबन्दर)
व.८	रसिकरायजी	चापासेनी नडियाद
व.८	श्री यदुनाथजी	सूरत
व.८	श्री घनश्यामलालजी	कामवन
व.१०	श्री व्रजरत्नलालजी	नडियाद
व.११	श्री विट्ठलेशरायजी	इन्दौर
व.११	श्री बालकृष्णलालजी	सूरत
व.१२	श्री विट्ठलेशरायजी	बम्बई
व.१३	श्री बालकृष्णजी	कांकरोली
व.१३	श्री कृष्णरायजी	इन्दौर
व.१३	श्री गोकुलेशजी	बम्बई

।। श्री गोवर्धनधरः नवनीतप्रियौ विजयेते ।।

A comprehensive free *App* is launched for the updates and notifications of daily darshans of **Lord Shrinathji** at **Nathdwara** on *Android* as well as on *iOS*.

Also available is a diary to utsavs and vrat days through annual Tippani, which is a guide and gateway to **Shrinathji, Nathdwara.**

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

This App provides valuable information and access to facilities in **Nathdwara.**

https://play.google.com/store/apps/details?id=com.promptsoftech.nathdwaradesign

।। आचारः परमो धर्मः ।।

शौचाचार विहीनस्य आसुरावेश सम्भवात् ।
देहशुद्धिः सदा कार्या करशुद्धिः विशेषतः।
(साधनदीपिका १९ , ६३)

पुष्टिमार्गीय सेवा में देह शुद्धि एवं करशुद्धि (हाथ धोने) का विशेष ध्यान रखा जाता है , इसी आचार विचार का पालन हम अपने मार्ग में अपरस(अस्पर्श) के रूप में करते हैं, यही पुष्टिमार्गीय जीवन जीने की पद्धति है जिससे की तन और मन स्वस्थ रहता है, बाह्य शुद्धि ही आन्तर शुद्धि का कारण बनती है। वर्तमान समय में कोविड महामारी ने सभी को सिखा दिया है कि स्वच्छता का महत्व क्या है। प्राचीन काल से ही वैदिक संस्कृति ने 'आचारः परमो धर्मः' द्वारा आचार विचार शुद्ध रखने का उपदेश दिया, उसी वैदिक संस्कृति को ही अपरस आदि के स्वरूप में पुष्टिमार्ग ने अपनाया है। अतः हम अपने आचार विचार शुद्ध रखते हुए आजीवन पुष्टिमार्गीय पद्धति द्वारा स्वस्थ रहें। इसी सदाचरण से हम अलौकिक स्वस्थता को प्राप्त होंगे, स्व प्रभु (श्री..जी) में सदा लीन रहना ही अलौकिक स्वस्थता है।

श्री गोकुलनाथ जी के वचनामृत / तीज तेरस एक, पंचमी पूनो एक

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मृ.	महिना तिथिन के फल
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	बहोत सुख होय, क्लेश न होय, अर्थ पूर्ण होय
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	महाभारत होय, अशुभ, जीवनाश होय
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	अर्थपूर्ण होय, कामनापूर्ण होय
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेश होय, जीव नाश होय, कुशल सूं घर नहीं आवे
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	वस्तु लाभ होय, मित्र मिले, व्याधि मिटे
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	महाचिन्ता होय, वियोग कदाचित् घर आवे
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	सौभाग्य पावे, रत्न सहित भलीभांति सूं घर आवे
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	मिलवो न होय, बहुत बुरो होय, जीवनाश होय
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	आशा पूर्ण होय, सौभाग्य पावे, कामना सिद्ध होय
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सौभाग्य पावे, दिन बहुत लगे, कुशल सूं घर आवे
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	क्लेश होय, जीवनाश नहीं, सौभाग्य पावे नहीं
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	मार्ग में सिद्धि, मित्र मिले, विघ्न मिटे, धन को लाभ होय

टिप्पणी व पुस्तकें मिलने का स्थान :- श्री गोवर्धन पुस्तकालय, नक्कारखाना चौक, खर्च भण्डार के पीछे, नाथद्वारा - **313301** (राजस्थान)

गणितकर्ता : त्रिपाठी राजेश्वर यदुनन्दन जी शास्त्री - 9414473016

India offset Printers, Ajmer # 9314393305